

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

Checked-2013

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र M741 विषय मंत्रविधी

नाव. सुदर्शनकवच

लेखक/लिपीकार कृष्णा हरोपंत बडगे (रामटेक)

पृष्ठ 36 काळ २०/१९३१ पूर्ण/अपूर्ण

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवच ॥

॥ मंत्रस्य ॥ अहिर्बुध्न्य ऋषिः ॥ अनुष्टुप छंदः ॥

॥ सुदर्शनरूपी श्री लक्ष्मी नृसिंहो देवता श्रौं बीजम् ॥

॥ हूं शक्तिः फट् कीलकम् ॥ सर्वोपद्रव नाश नार्थे- ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ जेप विनियोगः॥ अथषडंगन्यासः॥ ॐ एंचक्राय-॥

॥ अंगुष्ठाभ्यांनमः॥ ॐ विंचक्राय तर्जनीभ्यांनमः-॥

॥ ॐ सुंचक्राय मध्यमाभ्यांनमः॥ ॐ असुरांतक -॥

॥ चक्राय अनामिकाभ्यांनमः॥ ॐ सर्वलोक रक्षण-॥

॥ चक्राय कनिष्ठिकाभ्यांनमः॥ ॐ सुदर्शन-चक्राय-॥

॥ करतल करपृष्ठाभ्यांनमः॥ एवंहृदयादिन्यासः॥

॥ ॐ एंचक्राय हृदयायनमः॥ ॐ विंचक्राय शिरसेस्वाहा॥

॥ ॐ सुंचक्राय शिखायैवौषट्॥ ॐ असुरांतक-चक्राय कव-॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ चायतुं ॥ ॐ सर्व लोक रक्षण चक्राय नेत्र त्रयाय वौषट्

॥ ॐ सुदर्शन चक्राय अस्त्रायफट् ॥ अथ ध्यानम् ॥

॥ कल्पान्ताग्नी प्रकाशं त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूजयंतम् ॥

॥ रक्ताक्षं पिंग केशं रिपु कुल भयदं भीम दंष्ट्रा दहासम् ॥

॥ शंखं चक्रं गदाब्जं पृथुतर मुसलं चाप पाशां कुशांश्चे ॥

वि

॥ बिभ्राणं दोर्भिरा द्यं मनसि सुर रिपुं भावये चक्र संज्ञम् ॥

॥ १ ॥ अथ दिग्बंधः ॥ ॐ एच क्राय लं ऐं द्रा दिशं बंधयामि

॥ स्वाहा ॥ ॐ वि च क्राय रं आग्नेय दिशं बंधयामि स्वाहा ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ ॐ सुचक्राय यं याम्य दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ असु-॥

॥ रांतक-चक्राय क्षं नैऋती दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ सर्व-॥

॥ लोक रक्षण-चक्रायं वं वारूणी दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ सुर-॥

॥ श्रिन-चक्राय यां वायवी दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ आं, ईं,-॥

॥ विष-चक्राय सं कौबेरी दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ अघोर-॥

॥ चक्राय हुं (ज्ञं) ऐशानी दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ महाभय-॥

॥ निवारण-चक्राय ऊं ऊर्ध्व दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ नार सिंह ॥

॥ चक्राय-ह्रीं अधरां दिशं बंधयामि स्वाहा ॥ ॐ सहस्त्रार हुं फट् ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥स्वाहा॥ इतिदिग्बंधः॥ ॐ नमोभगवते वासुदेवायभोभो॥

॥सुदर्शन दुःखं दारय दारय दुरितं हन हन यां यमथ यमथ-॥

॥अंतरभवादिज्वर, माहेश्वरज्वर, भ्रमज्वर, विष्णुज्वर॥

॥भूतज्वर, विषमज्वर, वातज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्मज्वर-॥

॥एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, पक्षमास, त्रैमासिक॥

॥षण्मासिक, संतत ज्वर, सान्निपातिकांतर्गतापस्मारादि॥

॥सारादिकान्, सर्वज्वरान् छेदय, छेदय, छिंधी, छिंधी॥

॥भिंधी, भिंधी, आरोग्यं कुरु कुरु हां हां हुं हुं हुं फट् स्वाहा॥१॥

— × ——— × ——— × —

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

शिरः

॥ ॐ नमो भगवते सुदर्शन-चक्राय, शूलाक्षि शूल, कर्ण शूल - ॥

॥ कंठशूल, हृदय शूल, बाहु शूल, कुक्षि शूल, कटि शूल, अंग शूल ॥

॥ लिंग शूल, योनि शूल, गुद शूल, जानु शूल, जंघा शूल, पाद शूल ॥

॥ पार्श्व शूल, सर्वांग शूल, वात शूल, पित्त शूल, श्लेष्म शूलादि - ॥

॥ सर्व शूलान्निर्मुलय २ दानव दैत्य, कामिनी, वेताल, ब्रह्मराक्षस

॥ छाया ग्रहादि सर्व ग्रहान् छिंधी, छिंधी, भिंधी, भिंधी, ॥

॥ भस्मी कुरु भस्मी कुरु, परमंत्रान्, परयंत्राणि, पर तंत्राणि ॥

॥ छेदय छेदय ह्रां फट्, ह्रीं फट्, ह्रुं फट् स्वाहा ॥ २ ॥ ध ॥ ध्रुव

— × — — × — — × —

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥१४२॥

॥ ॐ नमो भगवते महा गरुड ध्वजाय एहि एहि सर्वज्वर -॥

॥ भयं चक्रेण छिंधी छिंधी, भिंधी भिंधी, शंख चक्र गदा पद्मै: ॥

॥ सर्वभयं हन हन नाशय २ मां रक्ष २ सर्व रक्षा कवच मा ज्ञा ॥

॥ पया ज्ञापय जनार्दन हुं फट् स्वाहा ॥३॥ ६७॥ ६७॥ ६७॥

—X———X———X—

॥१३॥

॥ ॐ नमो भगवते ॐ क्ष्रौं सुदर्शनाय महाश्च राजाय -॥

॥ गंधर्व, यक्ष राक्षस, भयं छिंधी, छिंधी, विदारय २ परमंत्रान् ॥

॥ ग्रासय २ परयंत्र, परतंत्र दुष्ट चेटक करण, महामारी -॥

॥ वेताल भूत प्रेत पिशाचादीन भक्षय २ एच्चक्राय, विच्चक्राय ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ सुचक्राय, असुरांतक चक्राय, सर्वलोक रक्षण चक्राय ॥

॥ सुदर्शन चक्राया स्त्र राजाय हुं फट् स्वाहा ॥ ६ ॥ ६ ॥

॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

—×— —×— —×—

॥ ॐ नमो भगवते महा सुदर्शन चक्राय, ज्वाला मालिने ॥

॥ आदित्य रूपाय सर्व तो मां रक्ष रक्ष महा बलाय ज्वाला परि ॥

॥ वर्त्तिन् ॐ क्ष्रौं सर्व ग्रहान् हन् हन् हुं फट् स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥ ६ ॥

—×— —×— —×—

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ ॐ नमो भगवते अरुचराजाय ॐ क्षौं-ह्रीं श्रीं नृसिंहाय ॥

॥ ॐ क्षौं देव दानव दैत्य पूजिताय प्रदीप्त कोट्यादित्यसह-॥

॥ स्र्य सम तेजसे, वज्रनख दंष्ट्रा युधाय दुं विकीर्ण केसर सटा ॥

॥ यक्षुभित् महार्णव, भेरी दुं दुभि निर्घोषाय सर्व मंत्रोतारणाय॥

॥ हृदयाय एहि२ भगवान्नारसिंह पुरुषवर परब्रह्मसर्व-॥

॥ सत्वान् स्फुर२ विजृंभय२ सिंहनादं मुंच२ मर्दय २॥

॥ विद्रावय२ त्रासय२ सर्व मंत्रान्, सर्वामित्र जाती श्चहन२॥

॥ हन संक्षेपय२ दारय२ ज्वालय२ स्फुर२ विजृंभय २॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥सिंहनादं मुंच२ मर्दय२ विद्रावय२ ग्रासय२ सर्व-॥

॥मंत्रान्, सर्वामित्रजातीश्च हन२ संक्षेपय२ दाहय२॥

॥ज्वालय२ स्फुर२ संघातय२ सर्वतो ज्वाला वज्रसमीर॥

॥चक्रेण, पाताल, ग्रहानु च्चाटयो च्चाटय, सर्वतोज्वाला-॥

॥ वज्रपंजरेण स्वर्गलोक ग्रहानु च्चाटयो च्चाटय, हृदयं॥

॥स्फोटय२ धुनि२ शीघ्रंदह२ पच२ मथ२ शोषय२ निकृं॥

॥तय२ तावत्समाग[redacted]न् पातालेभ्यःफट् असुरेभ्यःफट्॥

॥जीवजातीभ्यःफट् अन्यंजातीभ्यःफट् मंत्रजातिभ्यःफट्॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥सर्वान् मंत्रान् यंत्राणि, तंत्राणि भक्षय २ नारसिंहविष्णो

॥सर्वपातालेभ्यः [redacted] सर्वपापग्रहेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः॥

वि

॥सर्व मंत्रविद्दभ्यश्च रक्ष २ ॐ अं आं ह्रीं, क्ष्रौं, हुं फट्॥

॥स्वाहा॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥ ध्रु॥

—X— —X— —X—

॥ ॐ नमो भगवते अघोर नारसिंह महा बल पराक्रमाय ॥

॥रामदूताय, हनुमते, अघोर कालांतक, शाकिनी, डाकिनी॥

॥काकिनी, लाकिनी, राकिनी, हाकिनी, मारी, महामारी, भूत॥

॥प्रेत पिशाच, यक्षिणी, जलयक्षिणी, अघोर नारसिंह -॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ अघोर मूर्तये, अघोर भैरव महा वीर हनुमनसर्व-॥

॥सत्वान् बाधय२ ठः ठः ठः ठः हुंफट् स्वाहा ॥७॥

॥ ६६॥ ६६॥ ६६॥ ६६॥ ६६॥ ६६॥ ६७॥

———×———————×———

॥ ॐ नमो भगवते अघोर नारसिंह त्रिभुवनादिश्वर-॥

॥महाभीम पराक्रम, विघातक भूतप्रेत पिशाच शाकिनी॥

॥डाकिनी यक्ष, राक्षस, यमदूत, ब्रह्म राक्षस, वेताल, भैरव॥

॥कल्पान्त, नाना यक्षिणी कंकालादिकग्रहान् मर्दय२॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ बंधय२ भक्षय२ मारय२ छेदय२ मथय२ स्वादय२॥

॥ क्षोभय२ स्तंभय२ परकृत मंत्र, यंत्र, तंत्र, चेटकपुत्त-॥

॥ लिकादीन् विध्वंसय२ नाशय२ ठः ठः ठः ठः हुंफट्॥

॥स्वाहा॥८॥ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥

—X——X——X—

॥ ॐ नमो भगवते रामदूत महाभय निवारक भूतप्रेत -॥

॥ पिशाचादि ग्रहान्, ब्रह्मराक्षसादि ग्रहान्, नाशय २॥

॥ महाभीम पराक्रम परकृत् मंत्र यंत्र तंत्र चेटकादि॥

॥ पुत्तलिकादिन दूरस्थान् पर देशस्थान्, गृहस्थितान्॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

112611

॥ सर्वव्याधिस्थितान्, बहिर्भूमिस्थितान् उपवेशस्थितान्॥

॥ मूत्रस्थान्, सूत्रस्थान्, सूत्रकृतान्, वस्त्रकृतान्, अन्न-॥

॥ कृतान्, काष्ठकृतान्, चर्मकृतान्, पाषाणकृतान्, रोम-॥

॥ कृतान्, केश कृतान्, मृत्तिकादि कृतान्, जीव विशेषकृतान्॥

॥ औषधादि कृतान्, वृषभाकारान्, घटाकारान्, कबंधा-॥

॥ करान्, जीव विशेष मुंडाकरान्, जलस्थान्, अंतरिक्ष-॥

॥ स्थितान्, पाषाण मध्यगतान्, वृक्षे लंबाय मानान-॥

॥ नगरस्थितान्, रुद्रभूमिस्थितान्, नानाकार रूपाकरान्॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥२८॥

॥ नाना दैवत विकारान्, नाना बली भक्षकान्, शरीर ॥

॥दाह शोष कारकान्, वायु संज्ञकान्, शूल संज्ञकान् ॥

॥ गति छेदकान्, रक्त शोषकान्, मांस भक्षकान्, कुंडल-॥

॥कृती कारकान्, तीक्ष्ण शूल कारकान्, एकांग हार कान्-॥

॥२९॥

॥ कपाल शूल कारकान्, यंत्र अच्छेद कारकान्, परस्पर॥

॥ विग्रह कारकान्, नाना वर्णान्, सर्व चेटकान्, नाना समा-॥

॥ गता स्त्रक्षय दैवतान् नाशय २ बंधय २ खादय २॥

॥ग्रासय २ शोषय २ मथय २ छेदय २ भिंदय-भेदय ॥
मे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

113011

॥ भीषय २ मर्दय २ रोषय २ घातय २ शस्त्रओघेन-॥

॥ आचिरेण त्रासय २ मोचय २ तान् सर्वान् नुद २॥

॥ सुद २ भस्मी कुरु २ भो रामदूत वीक्षणेन् ठः ठः ठः॥

॥ हुं [redacted] फट् स्वाहा ग९॥ ध्न ध्न ध्न ध्न ध्न

—X— X —X—

॥ ३१ ॥

॥ ॐ नमो भगवते अघोरेश्वराय महाभयनिवारणाय,

॥ अघोर मूर्तये अघोर भैरवाय परकृत मंत्र, यंत्र, तंत्र ॥
का
॥ कृत चेटक पुत्तलीदीन् हन् २ भिंधी २ छिंधी २ -॥

॥ उच्चाटयो च्चाटय, चेटक बंध, केश चेटक, चर्म चेटक

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥३२११

॥ वज्रचेटक, मृत्तिकाचेटक, गोमयचेटक, अन्नचेटक ॥

॥ शूलान्नाशय २ मंत्रशूलान्नाशय २ परदेशस्थित -॥

॥ चेटकान्नाशय २ समीपस्थित चेटकान्नाशय २॥

॥ ग्रहस्थित चेटकान् नाशय २ नगरस्थित चेटकान् -॥

॥३३॥

॥ शीघ्रं नाशय २ छेदय २ खादय २ नानाबलिदान -॥

॥ भक्षक, छेदक, चेटकान् उच्चाटय २ नाना छेदकारक॥

॥ चेटकान् भस्मीकुरु २ ॐ ह्रां ह्रां ह्रां ह्रुं ह्रुं ह्रुं -॥

॥ फट् स्वाहा ॥१०॥ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥ ६॥

— X — X — X —

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ ॐ नमो भगवते महागरुडाय एहि२ आवेशय२॥

॥ दुष्ट राक्षसान् छिंधी२ महागरुडास्त्र दुष्टज्वरभूत ॥

॥ प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षसादि कृतांन्ययां छिंधी२ ॥

॥ भिंधी२ महागरुड बंधय२ हुं फट् स्वाहा ॥९९॥

॥ —×———×———×—— ॥

॥ इति श्री सुदर्शन संहितायां सुदर्शनकवच संपूर्णम् ॥

॥ यदक्षरपद भ्रष्टं स्वर व्यंजन विवर्जितं तत्सर्वं क्षम्य ॥

॥ तान् देव प्रसाद परमेश्वर ॥ छ छ छ छ छ छ छ छ

॥ संपूर्णमस्तु ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ हीवोथी कृष्णा देलांमत बडेग वास्तव्य - ॥

॥ अंबकुंड ता. रामटेक. जि. नागपूर.

यांनीं स्वतः विहीची असे. ज्येष्ठ शुद्ध तृतीया.

सोम गुरुवार ता० २०।५।३१।

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=16.08.19 14:21
,TRANSFERRED=2019/08/16 at 14:27:15
,PAGES=20
,TYPE=STD
,NAME=S0001478
,Book Name=M-741-SUDARSHAN KAVACH
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection